विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 2 अंक: 6 जून, 2009

विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद के नए सदस्य

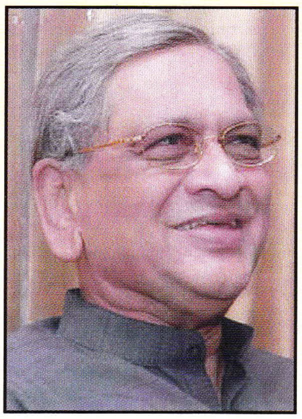

माननीय श्री एस.एम कृष्णा

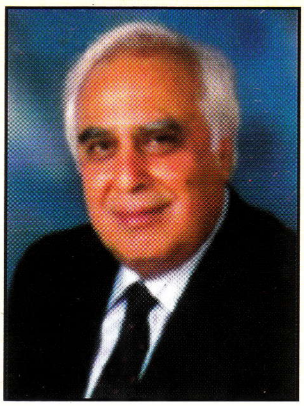

माननीय श्री कपिल सिब्बल

स्वागतम्

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद में भारत और मॉरीशस दोनों देशों की सरकारों के शिक्षा, विदेश एवं संस्कृति मंत्रालय के माननीय मंत्रीगण सदस्य होते हैं ।

भारत गणराज्य के 15वें आम चुनाव के बाद बने नए मंत्रिमंडल में विदेश मंत्रालय का कार्यभार माननीय श्री एस. एम कृष्णा तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय का कार्यभार श्री कपिल सिब्बल ने संभाला है ।

विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद के माननीय सदस्य श्री एस. एम कृष्णा एवं श्री कपिल सिब्बल का हार्दिक स्वागत करता है ।

इस समय मॉरीशस गणराज्य की ओर से विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद में शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी एवं विदेश, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व सहकारिता मंत्री डॉ. अरविन बुलेल सदस्य हैं ।

विदेशों में हिंदी अध्ययन

विश्व के लगभग 125 विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं में हिंदी पढ़ाई जाती है, यह हिंदी प्रेमियों के लिये प्रसन्नता एवं गर्व की बात है । पर आत्ममुग्ध होकर हिंदी का समुचित विकास नहीं किया जा सकता । उसके अध्ययन की समस्याओं पर भी विचार करना होगा, और उनके निदान ढूँढ़ने होंगे । भारत में भी हिंदी के अध्ययन के मार्ग में अनेक समस्याएँ हैं, पर यहाँ मैं विदेशों में हिंदी का अध्ययन करनेवालों की समस्याओं पर विचार करना चाहता हूँ ।

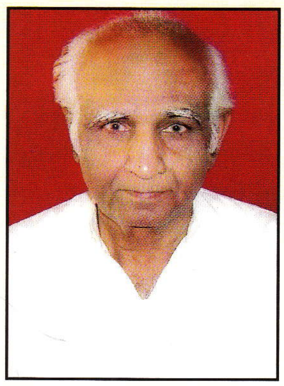

डॉ॰ सुधेश

अंग्रेज़ी भाषी देशों, जैसे अमेरिका और ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़नेवाले विदेशी छात्रों तथा छात्राओं की समस्याएँ अन्य देशों, जैसे फ्राँस, हंगरी, चैक गणराज्य, पोलैंड, रूस, इटली, जर्मनी, चीन, जापान, कोरिया आदि के विश्वविद्यालयों में हिंदी के विद्यार्थियों की समस्याओं से अलग हैं। अंग्रेज़ी भाषी देशों में हिंदी को अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़ाया जाता है, जबकि अन्य देशों के विद्यार्थी अपनी-अपनी मातृभाषाओं, जैसे फ्राँसीसी, हंगेरियन, चैक, पोलिश, रूसी, इतालवी, जर्मनी, चीनी, जापानी और कोरियन आदि के माध्यम से हिंदी पढ़ते हैं। शिक्षण के माध्यम की भिन्नता समस्याओं के स्वरूप को बदल देती है । यह एक व्यापक भ्रांति है कि अंग्रेज़ी के माध्यम से आप विश्व को जीत लेंगे, क्योंकि विश्व के अधिकांश देशों के निवासी अपनी - अपनी भाषा में जीते और मरते हैं ।

सन् 1959 ई. में दिल्ली में मेरी पहली भेंट तत्कालीन चैकोस्लोवाकिया के प्राग विश्वविद्यालय में हिंदी के शिक्षक डॉ. ओदोनेल स्मैकल से हुई थी । मैंने उनके सामने प्रस्ताव रखा कि मैं प्राग के चार्ल्स विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाने जा सकता हूँ । उनका दो टूक उत्तर था - 'पहले चैक भाषा सीख लीजिए, क्योंकि हमारे देश में हिंदी क्या सभी विषय चैक माध्यम से पढ़ाये जाते हैं ।' उनका उत्तर सुनकर मैं चौंका था, क्योंकि तब मैं समझता था कि अंग्रेज़ी विश्वभाषा है और मैं ठीक - ठाक अंग्रेज़ी जानता हूँ । अंग्रेज़ी सीमित अर्थ में विश्वभाषा है, पर अंग्रेज़ी के बाहर का विश्व अंग्रेज़ी के तथा-कथित विश्व से कहीं अधिक बड़ा और व्यापक है ।

.....शेष पृष्ठ 7 पर

श्रद्धांजलि

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक विष्णु प्रभाकर

हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर का निधन 11 अप्रैल, 2009 को हो गया । वे सत्तानबे वर्ष के थे ।

विष्णु प्रभाकर का नियमित लेखन सन् 1934 से प्रारंभ होकर उनके निधन से लगभग एक माह पूर्व तक अबाध गति से चलता रहा । उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, संस्मरण और यात्रा-वृतांत आदि साहित्य की सभी विधाओं में जमकर लिखा । लेखन के साथ-साथ उन्होंने असंख्य पुस्तकों और पुस्तिकाओं का संपादन भी किया ।
उन्होंने 160 से भी अधिक हिंदी कृतियों का सृजन किया । अपनी जिस रचना के लिए वे सर्वाधिक चर्चित रहे, वह है शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की प्रामाणिक जीवनी 'आवारा मसीहा' । इसे लिखने में उन्हें चौदह वर्ष लगे थे । इसके लिए उन्होंने बाँग्ला भाषा सीखी थी और बिहार, बंगाल तथा बर्मा की यात्राएँ की थीं । भारतीय जीवनी-साहित्य को यह उनकी अनुपम देन है ।

विष्णु प्रभाकर देश के स्वतंत्रता आंदोलन से भी गहरे जुड़े रहे । स्वामी विवेकानंद से प्रभावित होकर वे कहते, '' आगे बढ़ो, चलो ; चलोगे तो आगे बढ़ोगे और बढ़ोगे तो लक्ष्य को पा ही लोगे '' संभवत: उनकी कविता की निम्न पक्तियाँ इसी बात की ओर संकेत करती हैं :

हँसते-हँसते चलो
चलते चलते हँसो ।
बाहर रोशनी में चलो
हम भी रोशनी में चले
तुम भी रोशनी में चलो ।
उठो, खड़े होओ,
बस चलो ।

संपूर्ण भारत ही नहीं बल्कि रूस, नेपाल, बर्मा, थाईलैंड, कंबोडिया, चेकोस्लोवाकिया, वियतनाम, सिंगापुर और मॉरीशस आदि देशों की यात्राएँ उनके इसी तरह हँसते-हँसते चलते रहने के कारण ही संभव हुई हैं। परिस्थितियाँ कैसी भी रही हों, उन्होंने हार नहीं मानी। अपने अधिकारों और आत्म-सम्मान के लिए आखिर तक कोई समझौता नहीं किया।
प्रस्तुत है उनके जीवन की एक संक्षिप्त झाँकी:

21 जून, 1912 को मीरापुर, जिला: मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश में जन्मे विष्णु प्रभाकर ने हाई स्कूल, हिंदी भूषण, प्राज्ञ, हिंदी प्रभाकर तथा बी. ए. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं । मई 1929 से जून 1944 तक गवर्नमेंट कैटल फार्म में पहले दफ्तरी, फिर क्लर्की की । 'अखिल भारतीय आयुर्वेद महामंडल ' में अकाउंटेंट के पद पर कार्य किया । सरकार के निमंत्रण पर आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र में नाटक - निदेशक के रूप में कार्य किया ।

विष्णु प्रभाकर का विवाह 26 वर्ष की आयु में 30 मई, 1938 को कनखल (हरिद्वार) की सुश्री सुशील मांगलिक के साथ हुआ । 8 जनवरी, 1980 को 60 वर्ष की आयु में उनकी पत्नी का निधन हो गया । अनीता, अतुल, अमित और अर्चना उनकी चार संतानें हैं और सभी सुशिक्षित, विवाहित एवं कार्यरत हैं ।

विष्णु प्रभाकर जी की लेखन में रुचि बचपन से ही थी । सबसे पहले नवंबर 1931 में लाहौर के ' हिंदी मिलाप ' में उनकी कहानी ' दिवाली के दिन ' छपी, पर नियमित लेखन 1934 में शुरु हुआ ।

उन्होंने 64 से अधिक पुस्तकों और पुस्तिकाओं का संपादन और कई मासिक पत्रिकाओं के संपादन में सहयोग किया । वे ' सस्ता साहित्य मंडल ' की पत्रिका ' जीवन साहित्य 'का वर्षों तक अनाम रूप से संपादन करते रहे । उनका रूसी भाषा में 27 कहानियों का एक संग्रह तथा एक नाटक प्रकाशित हुआ । कई नाटक अनूदित होकर बर्मा, श्रीलंका, लंदन आदि अनेक देशों में रेडियो पर प्रसारित हुए । विदेशों में कई नाटक और एकांकियों का मंचन हुआ । 'आवारा मसीहा' तथा ' अर्द्धनारीश्वर ' का भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद तथा अनेक रचनाओं के देशी - विदेशी भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुए ।

विष्णु प्रभाकर को 'पाब्लो नेरूदा सम्मान', 'इंटरनेशनल ह्यूमनिस्ट अवार्ड', 'तुलसी पुरस्कार', 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार', 'सूर पुरस्कार', 'भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार', 'बेनीपुरी पुरस्कार', 'शलाका सम्मान', 'मूर्ति देवी पुरस्कार', 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार', 'शरत पुरस्कार', 'महात्मा गांधी जीवन-दर्शन एवं साहित्य सम्मान', 'राहुल सांकृत्यायन यायावरी पुरस्कार', 'शरत मेमोरियल मेडल' और 'विभिन्न राज्य सरकारों, अकादमियों, सभा-सोसाइटियों द्वारा लेखन, मंचन आदि के लिए सम्मानित-पुरस्कृत किया गया । वे केंद्रीय साहित्य अकादेमी, हिंदी अकादेमी, हरियाणा साहित्य अकादमी, भारतीय लेखक संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, गांधी भवन न्यास, गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा, इप्टा, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा; दक्षिण भारत हिंदी प्रचार समिति, संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली तथा भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार समितियों के सदस्य रहे ।

विष्णु प्रभाकर ने प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर; द्वितीय विश्व

हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस और तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन, नई दिल्ली में भाग लिया । उन्होंने सन् 1960 में हिंदी साहित्य सम्मेलन, रंगून के वार्षिक समारोह का उद्घाटन भी किया । उन्होंने अनेक विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थाओं में दीक्षांत भाषण दिया और कई विश्वविद्यालयों की नाटक प्रतियोगिताओं में निर्णायक तथा अखिल भारतीय साहित्यिक पुरस्कारों के निर्णायक मंडल के सदस्य रहे ।

विष्णु प्रभाकर का रचना-संसार

श्री विष्णु प्रभाकर का लेखन बहुआयामी रहा है । अनेक विधाओं में लिखकर उन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया । उनकी रचनाओं का विवरण प्रस्तुत है :

उपन्यास

ढलती रात, निशिकांत, तट के बंधन, स्वप्नमयी, दर्पण का व्यक्ति, परछाईं, कोई तो, अर्द्धनारीश्वर और संकल्प ।

कहानी -संग्रह

आदि और अंत, रहमान का बेटा, जिंदगी के थपेड़े, संघर्ष के बाद, सफर के साथी, खंडित पूजा, साँचे और कला, मेरी तैंतीस कहानियाँ, धरती अब भी घूम रही है, मेरी प्रिय कहानियाँ, पुल टूटने से पहले, मेरा वतन, खिलौने, मेरी लोकप्रिय कहानियाँ, इक्यावन कहानियाँ, मेरी कहानियाँ, मेरी कथा - यात्रा, एक और कुंती, जिंदगी एक रिहर्सल, एक आसमान के नीचे, मेरी प्रेम कहानियाँ, चर्चित कहानियाँ, कर्फ्यू और आदमी, आखिर क्यों, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, मैं नारी हूँ (दो खंडों में), जीवन का एक और नाम, संपूर्ण कहानियाँ (आठ खंडों में) और ईश्वर का चेहरा ।

लघु कथा साहित्य

जीवन पराग, आपकी कृपा है, कौन जीता कौन हारा ।

नाटक

नवप्रभात, समाधि, डॉक्टर, युगे-युगे क्रांति, टूटते परिवेश, कुहासा और किरण, टगर, बंदिनी, सत्ता के आर-पार, अब और नहीं, गांधार की भिक्षुणी, श्वेत कमल, केरल का क्रांतिकारी और सूरदास ।

एकांकी - संग्रह

इनसान और अन्य एकांकी, स्वाधीनता का संग्राम, अशोक तथा अन्य एकांकी, प्रकाश और परछाईं, बारह एकांकी, दस बजे रात, ये रेखाएँ, ये दायरे, ऊँचा पर्वत गहरा सागर, मेरे प्रिय एकांकी, मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी, तीसरा आदमी, डरे हुए लोग, अब और नहीं, मैं भी मानव हूँ, दृष्टि की खोज, मैं तुम्हें क्षमा करूँगा और अभया ।

जीवनी-संस्मरण

जाने - अनजाने, कुछ शब्द कुछ रेखाएँ, आवारा मसीहा, अमर शहीद भगत सिंह, सरदार बल्लभभाई पटेल, मेरे हमसफर, यादों की तीर्थयात्रा, मेरे अग्रज मेरे मीत, समांतर रेखाएँ, हम इनके ऋणी हैं, राह चलते - चलते, भारतीय साहित्य के निर्माता, उनके जाने के बाद, स्वामी दयानंद सरस्वती, सृजन के सेतु, हमारे पथ प्रदर्शक, स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती, हम सफर मिलते रहे, यादों की छाँव में, शब्द और रेखाएँ, आकाश एक है, आकाश एक है और साहित्य के स्वप्न पुरुष ।

आत्मकथा

एक दिशाहीन सफर, मुक्त गगन एवं पंछी उड़ गया ।

यात्रा-वृत्तांत

जमना-गंगा के नैहर मे, अभियान और यात्राएँ, हँसते निर्झर दहकती भट्ठी, हिमशिखरों की छाया में और ज्योति पुंज हिमालय।

विचार-निबंध

जन-समाज और संस्कृति, क्या खोया, क्या पाया, जन-समाज और संस्कृति, कलाकार का सत्य और मेरे साक्षात्कार ।

बाल साहित्य-नाट्य साहित्य

मोटे लाला, कुंती के बेटे, रामू की होली, दादा की कचहरी, अभिनव बाल एकांकी, अभिनव एकांकी, हड़ताल, नूतन बाल एकांकी, ऐसे-ऐसे, बाल वर्ष ज़िदाबाद, जादू की गाय तथा अन्य बाल एकांकी, प्रेरक बाल कथाएँ जादू की गाय, गजनंदन लाल के कारनामे, दो मित्र और मोती किसके ।

जीवनी साहित्य

शरतचंद्र, बंकिमचंद्र और शरतचंद्र का बचपन ।

बाल कथा साहित्य

सरल पंचतंत्र, जब दीदी भूत बनी, जीवन-पराग, स्वराज की कहानी, तपोवन की कहानियाँ, एक देश एक हृदय, घमंड का फल, हीरे की पहचान, मोतियों की खेती, पाप का घड़ा, गुड़िया खो गई, पहाड़ चढ़े, गजनंदन लाल और सुनो कहानी ।

विविधा

बापू की बातें, हजरत उमर, कस्तूरबा गांधी, बाजी प्रभु देशपांडे, हारू उल रशीद, हमारे पड़ोसी, मन के जीते जीत, मुरब्बी, ऐसे थे सरदार, कुम्हार की बेटी, शंकराचार्य, बद्रीनाथ, नागरिकता की ओर पंचायत राज रूपक, यमुना की कहानी, रवींद्रनाथ ठाकुर, मानव अधिकार, पहला सुख निरोगी काया, मैं अछूत हूँ और साहित्य और कौमी मित्रता (लेख एवं कहानियाँ)

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक एवं हिंदी साहित्य के सुदृढ़ आधारस्तंभ के प्रति विश्व हिंदी सचिवालय अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

संक्रमण बेला

आज समस्त विश्व संक्रमण के दौर से गुजर रहा है । हमारी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताएँ प्रभावित हो रही हैं ; मूल्य विघटित हो रहे हैं और हम कई तरह के सवालों के घेरे में आ गए हैं । इस ध्वंस के पीछे निर्माण की दिशा अवश्य छिपी हुई है ।

विष्णु प्रभाकर

महासचिव की ओर से

नियति की गति

पिछले दिनों हिंदी जगत को नियति के भीषण वज्रपात का सामना करना पड़ा । 11 अप्रैल को हिंदी गद्य साहित्य पर अमिट छाप छोड़ने वाले श्री विष्णु प्रभाकर 97 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गए। 18 जून को मध्यप्रदेश में एक सड़क दुर्घटना में कवि-सम्मेलनों में अपनी हास्य कविताओं से धूम मचाने वाले श्री ओम प्रकाश आदित्य, श्री लाड़सिंह गुर्जर और श्री नीरज पुरी का असामयिक निधन हो गया। नियति को इतने से ही संतोष नहीं हुआ। 17 जून को हास्य रस के एक अन्य सुविख्यात कवि अल्हड़ बीकानेरी भी हमें छोड़कर चले गए । इन सबके महाप्रयाण से हिंदी जगत की अपूरणीय क्षति हुई है ।

यद्यपि सभी साहित्यकारों का देहावसान अत्यंत आघातकारी और पीड़ादायी है किंतु श्री विष्णु प्रभाकर की मृत्यु के साथ हिंदी साहित्य के एक युग का अंत हो गया । उनका आत्मीय मार्गदर्शन, स्नेहिल आशीष और हृदयस्पर्शी संभाषण अब हमें प्राप्त नहीं होगा । महाकाल की क्रूर क्रीड़ा ने हमें एक तप:पूत शलाका पुरुष की छत्रछाया से वंचित कर दिया ।

आदरणीय विष्णु जी साहित्य की अनेक विधाओं के समर्थ रचनाकार रहे । उन्होंने उपन्यास, कहानी, एकांकी, निबंध, यात्रा - वृत्तांत, संस्मरण, बाल साहित्य, लघु कथा और आत्मकथा जैसी विधाओं में प्रभूत लेखन करके हिंदी साहित्य को समृद्ध करने के साथ ही उसे विस्तृत आयाम भी प्रदान किया । उन्होंने हिंदी को सृजनात्मक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । जब छायावादी युग गद्य और पद्य की भाषा को नई भावाभिव्यक्ति प्रदान कर रहा था और खड़ी बोली अनुभूतियों की गहनता और सूक्ष्मता को अपने भीतर समेटने के लिए मधुर - मृदु हो रही थी, तब विष्णु प्रभाकर जी ने हिंदी गद्य को नूतन आयाम और लीक से हटकर संदर्भ देने का संकल्प लिया । उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज की जड़ता पर जहाँ प्रहार किया, वहीं व्यवस्था की क्रूरता के प्रति अपने गहरे रोष और आक्रोश को भी प्रकट किया ।

उनका प्रचुर गद्य साहित्य अपनी विविधता और गहनता के लिए सदैव अविस्मरणीय बना रहेगा । उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी और बाल साहित्य लेखन में महारथ हासिल करने के साथ ही हिंदी में जीवनी-लेखन की विधा को भी एक नया आयाम प्रदान किया । उन्होंने बंगला के महान उपन्यासकार शरतचन्द्र की जीवनी 'आवारा मसीहा' लिखकर जीवनी साहित्य को गगनचुंबी ऊंचाई प्रदान की । उनकी यह कृति विश्व-साहित्य में कालजयी बन गयी है । शरतचन्द्र के जीवन से जुड़े सभी संदर्भों को जानने - समझने और जाँचने के लिए वे भागलपुर (बिहार) से लेकर थाईलैंड, बर्मा और बंगाल तक 14 वर्षों तक यायावर बनकर घूमते रहे । सूक्ष्म भावनाओं और गहन संवेदनाओं के चितेरे शरत बाबू को हृदयग्राही संवेदना के साथ विष्णु जी ने 'आवारा मसीहा' में जीवन्त किया । शरतचन्द्र अपने मर्मस्पर्शी साहित्य के कारण अमर हुए किंतु विष्णु जी शरतचन्द्र की जीवनी के कारण अमर हो गए ।

विष्णु प्रभाकर जी रचनाकार के रूप में जितने विराट् और पहुँच के बाहर लगते थे, व्यक्ति के रूप में उतने ही सहज, सरल और सर्वसुलभ थे । व्यक्ति के रूप में उनकी पारदर्शिता उन्हें परम आदरणीय बनाती थी। जब भी मैं उनसे मिली, उनके पितृतुल्य स्नेह ने मुझे आप्लावित किया । वे मॉरीशस और हिंदी की प्रगति के बारे में जाने के लिए सदा उत्सुक रहते थे । गांधी टोपी और कंधे से लटके बैग में उनका समूचा व्यक्तित्व रूपायित होता था । उनका यह पहनावा उनके 'सादा जीवन उच्च विचार' का सटीक परिचायक था । वे लेखन से साहित्यकार और मन से संत थे ।

विष्णु प्रभाकर जी सदा अपने ' स्वत्व' से जुड़े रहे । उन्होंने वादों और विवादों के चक्कर में न लेखन की गरिमा को धूमिल होने दिया और न ही भारतीयता की ज्योति को मंद होने दिया । वे आचरण और व्यवहार में जहाँ गाँधी दर्शन के प्रतीक बने वहीं चिंतन-मनन और लेखन में उन्होंने वैदिक उद्घोष - आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वत: (ऋग्वेद -1.89.1) अर्थात् अच्छे विचारों को सब ओर से आने दो, का मूल मंत्र स्वीकार किया । वे परम्परा और आधुनिकता के संगम थे ।

स्वाधीनता आंदोलन से आन्तरिक रूप से जुड़े होने के कारण उन्होंने गाँधी जी की राजनीतिक- आध्यात्मिक सोच को साहित्य में प्रतिफलित करने का सदैव प्रयत्न किया । उनका मानना था कि व्यक्ति जब तक मानसिक रूप से स्वाधीन नहीं होगा, तब तक कोई भी राजनीतिक स्वाधीनता कारगर सिद्ध नहीं हो सकेगी । इसीलिए उन्होंने वादों के मुहावरों के बजाय मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा को अपने साहित्य में अधिक महत्व दिया ।उनकी रचनाओं में मानवीय चेतना अपनी संपूर्ण आभा के साथ परिलक्षित होती है ।

ऋषि दयानंद और महात्मा गाँधी से प्रभावित होने के कारण वे संस्कारों के प्रति बहुत आग्रहवान थे । वे मानते थे कि मनुष्य का चारित्रिक निर्माण परम आवश्यक है । इसीलिए उन्होंने बाल साहित्य का भी प्रचुर लेखन किया । प्राय: बड़े साहित्यकार बाल साहित्य की उपेक्षा करते हैं । लेकिन विष्णु जी ने बाल साहित्य को संस्कार का माध्यम मानकर उस पर विशेष बल दिया । बच्चों के लिए कहानियाँ और एकांकी लिखकर उन्होंने बाल-मन को संस्कार सिद्ध करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया ।

......शेष पृष्ठ 10 पर

संपादकीय

सर्वव्यापी लघु पत्रिकाएँ

विश्वव्यापी पाठकों तक अपने विचार और अनुभव पहुँचाने के लिए प्रबुद्ध रचनाकार एक ऐसे माध्यम को चुनते हैं, जो न केवल समाज के लिए सहज-सुलभ हो, बल्कि उनकी पहुँच में भी हो । आज संचार क्रांति के युग में भी वे इसी सहज-सुलभ मुद्रित माध्यम पर अधिक निर्भर करते हैं । जी हाँ, मेरा संकेत हिंदी की उन लघु पत्रिकाओं की ओर है जो अपने महत् सामाजिक उद् देश्य को पूरा करने की दिशा में अपने-अपने सीमित संसाधनों के बल पर निरंतर अग्रसर हैं। ये पत्रिकाएँ नए-पुराने रचनाकारों की अधिक से अधिक रचनाओं को प्रकाशित करने का एक सशक्त माध्यम हैं । महान लेखक हुए बिना भी एक रचनाकार अपनी सशक्त लेखनी के बल पर बड़ी सहजता से इन पत्रिकाओं के ज़रिये अपने विचार और अनुभव असंख्य पाठकों तक पहुँचाने में न केवल सफल होता है, बल्कि अपनी एक अलग पहचान भी बनाता है । जबकि मोटी-मोटी ज़िल्दों में छपनेवाली भारी-भरकम पत्रिकाएँ अपने सीमित दायरे में ही बँधी रह जाती हैं। ये बड़ी पत्रिकाएँ अपनी कीमत और कलेवर के कारण सर्वसुलभ नहीं हो पातीं । आर्थिक कारण के साथ-साथ अन्य कई कारणों से इनकी गति भी बहुत धीमी हो जाती है । जबकि सस्ती और हल्की होने के कारण लघु पत्रिकाओं की रफ्तार बहुत तेज होती है । सामग्री, कलेवर, आकर्षक छपाई, कीमत और जन-जन तक पहुँचने की तेज रफ्तार के कारण ये पत्रिकाएँ आम लोगों तक आसानी से पहुँच जाती हैं । ये जहाँ भी पहुँचती हैं, वहाँ पहले से ही इनका इंतज़ार रहता है और हर स्तर के लेखकों एवं पाठकों द्वारा इनका बड़े ही उत्साहपूर्वक स्वागत किया जाता है। पाठकों के बीच इनका आदान-प्रदान भी अबाध गति से होता रहता है ।

जब मैं भारत में था तब दुनियाभर की छोटी-बड़ी तरह-तरह की हिंदी पत्रिकाएँ प्राप्त होती थीं, किंतु मॉरीशस आने के बाद सचिवालय में प्रवासी टुडे, हिंदी जगत, प्रवासी संसार, हिंदी प्रचार वाणी, साहित्य अमृत, साहित्य प्रभा, नई शिक्षा, राष्ट्रभाषा, वार्तावाहक, साहित्य क्रांति, हिंदी चेतना, वसुधा, विश्वा, अक्षरम्, विद्युत स्वर, भंडारण भारती, प्रोत्साहन, ऊर्जा दीप्ति, सुदर्शन श्याम संदेश, परती पलार, सुमन, वसंत, बाल सखा, पंकज, हिमालिनी और पुरवैया आदि कुछ हिंदी पत्रिकाएँ ही मिल रही हैं। लेकिन इन लघु पत्रिकाओं के माध्यम से जो सामग्री पढ़ने को मिलती है, उसके स्तर पर किसी तरह का प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता । कभी-कभी तो ऐसे-ऐसे रचनाकारों की उत्कृष्ट रचनाएँ पढ़ने को मिल जाती हैं जिनके नाम कभी पढ़ने-सुनने में ही नहीं आए और कभी-कभी ये पत्रिकाएँ हिंदी के विकास से जुड़ी किसी भी तरह की अद्यतन जानकारी अन्य पत्रिकाओं से साभार लेकर बड़े प्रेम से पुनर्प्रकाशन से भी परहेज नहीं करतीं। निश्चित ही यह इन लघु पत्रिकाओं की उदारता, ईमानदारी और निष्पक्षता का सूचक है । ये पत्रिकाएँ समाज के हर स्तर के रचनाकारों को आवश्यक मंच प्रदान करने का पूर्ण प्रयास करती हैं । इनमें समाज के हर पहलू को उजागर करने की अदम्य क्षमता होती है ।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि समय की माँग के अनुसार इन लघु पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है । भले ही इन पत्रिकाओं की कीमत कम होती है, इनका कलेवर संक्षिप्त होता है, परंतु इनमें प्रकाशित रचनाएँ निश्चित ही 'गागर में सागर' भरने का काम करती हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हिंदी का विश्वव्यापी वातावरण बनाने में देश-विदेश से प्रकाशित होनेवाली हिंदी की ये छोटी-छोटी पत्रिकाएँ छोटी-छोटी गिलहरियों की तरह वैश्विक हिंदी-सेतु निर्माण में निश्चित ही सहायक होंगी। आवश्यकता है तो सिर्फ इस बात की कि विश्व के समस्त हिंदी प्रेमियों द्वारा इन पत्रिकाओं को हर तरह का संबल प्रदान करना होगा । इनके प्रकाशन के प्रति जागरूक रहते हुए यथासंभव सहयोग देना होगा । इन्हें संग्रहणीय बनाने के लिए ढूँढ़-ढूँढ़कर अधिक से अधिक रचनाकारों की उत्कृष्ट रचनाएँ प्रकाशित करने के साथ ही विश्वव्यापी पाठकों तक पहुँचाने का एक समन्वित प्रयास भी करना होगा। ये पत्रिकाएँ अधिक सक्षम होकर अपने लक्ष्य-पथ पर तभी आगे बढ़ सकेंगी जब हम इनके प्रकाशकों, संपादकों, रचनाकारों और पाठकों से जुड़कर उनके इस लघु, किंतु महत् कार्य में सहयोग देने के लिए संकल्पबद्ध होकर अपना हाथ हमेशा आगे बढ़ाए रखेंगे ।

'विश्व हिंदी समाचार' के पिछले अंकों में हमने विश्व की कुछ हिंदी पत्रिकाओं की जानकारी आप तक पहुँचाने का प्रयास किया है। इस बार प्रोफेसर सरन घई के संपादन में हाल ही में टोरंटो से प्रकाशित एक नई पत्रिका 'सौभाग्य' के बारे में संक्षिप्त सूचना दे रहे हैं । संभवत: ऐसी अनेक पत्रिकाएँ विश्व के अन्य स्थानों से भी प्रकाशित हो रही होंगी। यदि सुधी पाठक अथवा संपादक बंधु इस संबंध में हमें विस्तृत जानकारी भिजवा सकें तो हम उनके आभारी होंगे। ••

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

प्रधान संपादक
डॉ. (श्रीमती) विनोदबाला अरुण
संपादक
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu / dsgwhs@intnet.mu

' रामबिरिछ ' का लोकार्पण

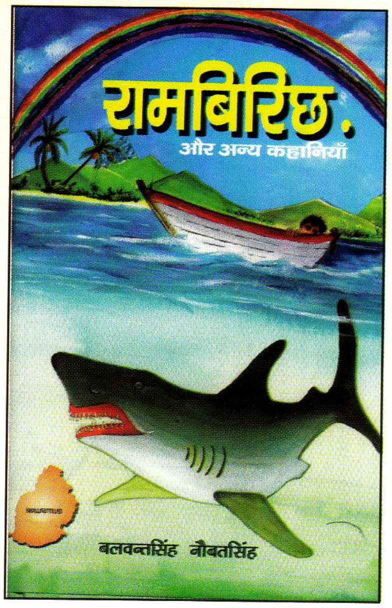

19 फरवरी 2009 को हिंदी संगठन, पोर्ट लुइस में बलवंतसिंह नौबतसिंह की पुस्तक ' रामबिरिछ ' का लोकार्पण प्रख्यात हिंदी सेवक पंडित हनुमान गिरधारी के कर-कमलों से संपन्न हुआ । जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर चमन लाल इस साहित्यिक समारोह में विशेष अतिथि थे ।

इस अवसर पर हिंदी संगठन की महासचिव श्रीमती अंजु घरभरन के स्वागत भाषण के पश्चात संगठन के अध्यक्ष श्रीमान अजामिल माताबदल ने बलवंतसिंह नौबतसिंह का परिचय देते हुए कहा - बलवंतसिंह नौबतसिंह अंग्रेजी के विद्वान होते हुए भी अपने पिता जी से प्रेरणा लेकर हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में लगे रहे । यही नहीं मॉरीशस के दक्षिण प्रांत की हिंदी प्रचारिणी सभा के सक्रिय छात्र के रूप में हिंदी में कई नाटक प्रस्तुत करते रहे हैं । '

बलवंतसिंह नौबतसिंह के स्वर्गीय पिता सूरूजनारायण उर्फ रामबिरिछ के संबंध में रोचक संस्मरण सुनानेवालों में श्रीमान नरेंद्र संतबक्षसिंह, रंजीत जगतपाल तथा सूर्यदेव सिबरत थे ।

कार्यक्रम के संचालक डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने श्रोताओं को जानकारी देते हुए कहा कि बलवंतसिंह नौबतसिंह ने जो कुछ लिखा है वह उनकी खोज का ही परिणाम है ।

'रामबिरिछ' के लेखक ने अपने वक्तव्य में बताया कि उन्होंने अपने पिता जी सूरूजनारायणसिंह उर्फ रामबिरिछ के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के ध्येय से इस पुस्तक को प्रकाशित किया है ।

उन्होंने उन सभी लोगों को धन्यवाद ज्ञापित किया जिन्होंने किसी न किसी रूप में इस पुस्तक के प्रकाशन में हाथ बँटाया है, खास करके श्रीमान सचिन सागर जो लोकार्पण के लिए दिल्ली से पुस्तक की कुछ प्रतियाँ लाए और राकेश शिबलोल जिन्होंने कवर डिज़ाइन के लिए बहुत परिश्रम किया ।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केंद्र के अध्यक्ष प्रोफेसर चमन लाल ने विस्तारपूर्वक रामबिरिछ पर अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि इस संग्रह में कहानियों के साथ-साथ पत्र, लेख और नाटक भी हैं । बलवंतसिंह नौबतसिंह के प्रयास एवं उत्साह के लिए बधाइयाँ दीं । उनकी दृष्टि में बलवंतसिंह नौबतसिंह की अपनी विशेषताएँ हैं । उन्होंने सारी कहानियाँ और लेख पढ़े । उनमें से कहानियाँ अच्छी लगी : ' गुलाबो ', ' गाज़ा का हिरन ', '49 रोड आइलैंड रेड मुर्गियाँ और 2 शिकारी कुत्ते ' इत्यादि । इन कहानियों में कुछ सशक्त हैं, कुछ भारी क्षमता रखनेवाली हैं, कुछ दिलचस्प भी हैं। उनके विचार में भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा सबसे उत्तम साधन है । समाज में लेखक की शक्तियाँ और जिम्मेदारियाँ अनेक हैं ।

उनके लिए विशेषकर कृषि से संबंधित ' चि पिमाँ ' (छोटी मिर्च) शीर्षक कहानी आकर्षक बन पाई है, क्योंकि इस कहानी के माध्यम से लेखक ने मॉरीशस के राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम की उदारता (विदेशों में पढ़ रहे छात्रों के प्रति) पर प्रकाश डाला है ।

यह गौर तलब है कि मॉरीशसीय साहित्य में पहली बार के लिए पशु-मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ लिखी गई हैं । इस का श्रेय बलवंतसिंह नौबतसिंह को जाता है ।

प्रोफेसर चमन लाल की दृष्टि में लेखक ने अपनी भाषा को भोजपुरी शब्दों के प्रयोग से जीवंत बनाया है ।

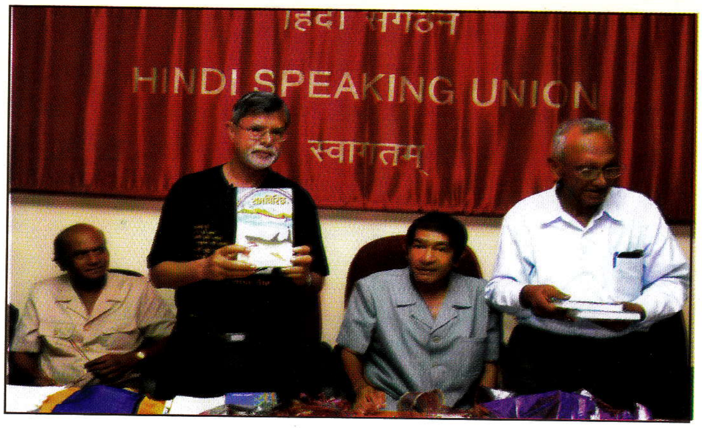

बाएँ से दाएँ: डॉ. चिंतामणि, प्रो. चमन लाल, बलवंतसिंह नौबतसिंह और पं. हनुमान दुबे गिरधारी

पंडित हनुमान दुबे गिरधारी ने पुस्तक के लोकार्पण से पहले अपने वक्तव्य में बलवंतसिंह नौबतसिंह को हार्दिक बधाई दी । उन्होंने श्रोताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि बलवंतसिंह नौबतसिंह अँग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं पर अधिकार रखते हैं । वे भाषा प्रयोग के संबंध में हमेशा सतर्क रहते हैं । पाठकों की उम्र, रुचि तथा ज्ञान के आधार पर अपने नाटकों, कहानियों, पत्रों और लेखों में शब्दों का प्रयोग करते हैं । उन्होंने यह बताया कि बलवंतसिंह नौबतसिंह ने अपने पिताजी के नाम लिखे पत्र में एक कविता का भी समावेश किया है - ' एअर इंडिया की व्योमबाला '। इस तरह कई रचनाओं में कवि-हृदय की भावुकता की झलक मिलती है ।

इस साहित्यिक कार्यक्रम में मॉरीशस के शीर्ष साहित्यकार अभिमन्यु अनत के अतिरिक्त रामदेव धुरंधर, श्रीमती भानुमती नागदान, इंद्रदेव भोला ' इंद्रनाथ ', सूर्यदेव सिबरत, डॉ. लालदेव अंचराज, आदि अनेक साहित्यकार उपस्थित थे ।

अंत में हिंदी संगठन के उप-प्रधान श्री राजनारायण गति जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया । ••

सौभाग्य का लोकार्पण

टोरांटो, कनाडा: 29 मार्च, 2009 रविवार को गोर रोड, ब्रैंप्टन स्थित श्री साँई आध्यात्मिक केंद्र में हिंदी-अंग्रेजी मासिक पत्रिका सौभाग्य का लोकार्पण संपन्न हुआ। लगभग 150 से भी अधिक व्यक्तियों की उपस्थिति में अंग्रेजी समाचार पत्र ' मानसून जर्नल ' के संपादक श्री लोगन ने इस पत्रिका का लोकार्पण करते हुए कहा कि यह पत्रिका मन, बुद्धि और शरीर तीनों के समग्र विकास और उत्थान का एक अनूठा प्रयास है । गागर में सागर भरते लेख तथा अन्य जानकारियाँ निश्चित ही पाठकों को दीर्घकालीन लाभ पहुँचाने में सक्षम सिद्ध होंगी, ऐसा विश्वास है और यही शुभकामना भी है ।

इस अवसर पर श्री साँई आध्यात्मिक केंद्र के प्रमुख श्री चंद्रकांत जी का भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ, जिन्होंने स्वयं अपनी देख-रेख में लोकार्पण कार्यक्रम को विधिवत संपन्न करवाया तथा पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए अपना शुभाशीष प्रदान किया । श्री साँई आध्यात्मिक केंद्र के सभी सेवादारों ने इस अवसर को आध्यात्मिक परिवेश से अवगुंठित कर इसे एक यादगार समारोह बनाने में अपना पूरा सहयोग दिया, जिसके लिए पत्रिका के संपादक-प्रकाशक हृदय से आभारी थे।

पत्रिका के संपादक-प्रकाशक प्रोफेसर सरन घई तथा सह-प्रकाशक आचार्य संदीप त्यागी ने मंदिर के प्रांगण में उपस्थित सभी महानुभावों का धन्यवाद करते हुए पत्रिका को सफल बनाने हेतु सभी के सहयोग की कामना की । इस अवसर पर उन्होंने श्री साँई आध्यात्मिक केंद्र के श्री चंद्रकांत जी व सभी सेवादार, यूनिवर्सल ऑटो बाडी के राजन कौशल, कील एंड स्टील्स डेंटल आफ़िस के डाक्टर सोमेश शर्मा, हिंदी अब्राड के संपादक-प्रकाशक श्रीमती व श्री पांडे, मानसून जर्नल के संपादक-प्रकाशक श्रीमती व श्री लोगन, रोड टुडे के संपादक-प्रकाशक श्री मन्नन का विशेष तौर पर आभार प्रकट किया जिनके सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन संभव हुआ ।

स्वास्थ्य, ज्योतिष, आयुर्वेद, होम्योपैथी, मसाज, एक्यूपंक्चर, प्राकृतिक चिकित्सा, ज्योतिष शास्त्र, हस्तरेखा शास्त्र, रेकी, टैरो कार्ड आदि विषयों से भरपूर यह अनूठी पत्रिका कनाडा में केवल 20 डालर प्रतिवर्ष (विदेशों के लिए डाकखर्च अलग) देकर आप अपने घर पर भी मंगवा सकते हैं । यह पत्रिका website : www.muktipathmeditation.com पर भी उपलब्ध है । अतिरिक्त जानकारी के लिए ई-मेल: superiormonthly@yahoo.ca तथा फोन (416) 816 5559, (905) 799 9955 पर भी आप पत्रिका के संपादक-प्रकाशक प्रो. सरन घई से संपर्क कर सकते हैं ।..

......पृष्ठ 1 का शेष अंश

विदेशों में हिंदी पढ़नेवालों की पहली समस्या शिक्षण का माध्यम है । विश्व में हिंदी शिक्षण का कोई एक माध्यम नहीं है, बल्कि अनेक माध्यम हैं । कई विदेशी भाषाएँ संबंधित देशों में हिंदी के शिक्षण की माध्यम हैं । माध्यम की भिन्नता अध्यापकों के लिये चुनौती प्रस्तुत करती है और विद्यार्थियों के लिये भी । अंग्रेज़ी भाषी देशों में तो अंग्रेज़ी का माध्यम चल जाएगा, पर इटली और फ्राँस जैसे देशों में वहीं की भाषाओं के माध्यम से हिंदी पढ़ाई जा सकती है ।

विश्व के अनेक देशों में हिंदी अध्ययन की एक अन्य बड़ी समस्या स्तरीय पाठ्य - पुस्तकों एवं सहायक पुस्तकों की कमी है ।
पाठ्य - पुस्तकों एवं सहायक पुस्तकों के निर्माण में अनेक भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास किए, और उनसे विदेशों में हिंदी शिक्षण में बड़ी सहायता मिली । पर इन व्यक्तिगत प्रयासों में तालमेल का अभाव रहा, जिसके कारण ऐसी पाठ्य - पुस्तकों का व्यापक प्रचार नहीं हो पाया ।

विदेशों में हिंदी का अध्ययन एवं शिक्षण चुनौती से कम नहीं हैं । इस चुनौती का बहुत से हिंदी प्रेमी (जिन में अनेक विदेशी मूल के हैं) खूबी से सामना कर रहे हैं । समस्याओं के समाधान खोजने में भारत सरकार और भारतवासी यदि सहयोग दें तो उसके अच्छे परिणाम निकलेंगे।..

पता : ए - 34 न्यू इंडिया अपार्टमेंट्स, रोहिणी - सैक्टर - 9, दिल्ली - 110085 (भारत)

संपादक महोदय,

विश्व हिंदी समाचार पत्रिका का अंक: 4 प्राप्त हुआ । पढ़ते ही मेरा हृदय खुशियों के अंबार से ओत-प्रोत हो गया कि आज विश्व में हिंदी की प्रेम-प्रगाढ़ता को सामर्थ्य देनेवाले शुभचिंतक संस्कृति की अस्मिता को सुरक्षित रखने के लिए अथक प्रयासरत हैं ।

विश्व में हिंदी की स्वयंसेवी संस्थाएं वैश्विक स्तर पर भारतीय मूल के लोगों की संस्कृति तथा हिंदी प्रेमियों के लिए जो संसाधन जुटाकर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु सदभावित होते हुए कर्मठशील हैं, वे नि:संदेह प्रशंसा के पात्र हैं । जो इन सृजनात्मक कार्यों को विश्व हिंदी जगत में उचित सम्मान और गौरव दिलाकर इस महायज्ञ में अपने सहयोग की आहुतियाँ दे रहे हैं, मैं उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ ।

डॉ. देवेंद्र दीपक ने स्थानीय युवा रचनाकारों के लिए काव्य-लेखन पर कार्यशालाएं आयोजित करने का जो सुझाव दिया है वह निश्चय ही सार्थक सिद्ध होकर विश्व स्तर के लिए अनुकरणीय और प्रेरणाप्रद होगा । वरिष्ठ हिंदी कवि श्री कुंवर नारायण को 41 वां ज्ञानपीठ पुरस्कार घोषित करने पर, श्री अजित कुमार को "जयजयवंती" और श्री आशकरण अटल को "हास्य रत्न " सम्मान पाने के लिए हार्दिक बधाई देते हुए आशा करता हूँ कि हिंदी जगत के साहित्य प्रेमियों व हिंदी के प्रति श्रद्धा रखनेवालों के परिश्रम से हम निश्चित रूप से आनेवाली पीढ़ी को भाषा और संस्कृति की अमृत धरोहर सौंप सकने में अवश्य सफल होंगे ।

संपादन मंडल को सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(अनंगपाल सिंह पंवार)
उप प्रबंधक (राजभाषा), दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली ।

प्रवासी हिंदी साहित्य पर संगोष्ठी

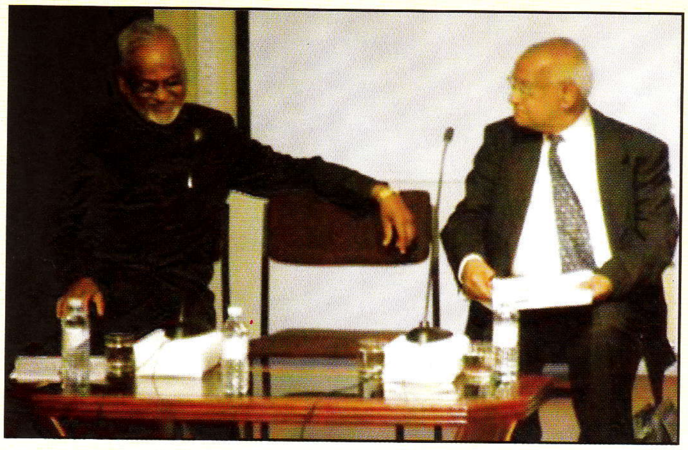

बाएँ डॉ. कृष्ण कुमार और दाएँ प्रो. श्याम मनोहर पाण्डेय

लंदन के नेहरू केंद्र ने 'समकालीन प्रवासी हिंदी साहित्य ' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 25 अप्रैल, 2009 को किया । इस संगोष्ठी की अध्यक्षता ओरिएंटल यूनिवर्सिटी, नेपल्स, इटली के पूर्व प्रोफेसर डॉ. श्याम मनोहर पाण्डेय ने की तथा बीजवक्ता के रूप में बहुभाषी साहित्यिक संस्था, बर्मिंघम के अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए । संगोष्ठी का शुभारंभ नेहरू केंद्र की निदेशक श्रीमती मोनिका कपिल मोहता के स्वागत भाषण से हुआ ।

संगोष्ठी में जिन लेखकों, पत्रकारों, राजनियकों एवं हिंदी प्रेमियों ने भाग लेकर इसे सफल बनाया, उनमें भारत के आप्रवासी कार्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव डॉ. मृणाल कांत पाण्डेय, बीबीसी हिंदी सेवा की पूर्व प्रमुख डॉ. अचला शर्मा, कहानीकार ज़किया जुबेरी, कथाकार व कवि उषा राजे सक्सेना और तेजेंद्र शर्मा मुख्य हैं ।

इस अवसर पर दिव्या माथुर की दो हिंदी काव्य-कृतियों 'झूठ, झूठ और झूठ ' एवं 'चंदन पानी ' का लोकार्पण भी कवि और लेखक श्री रेजीनल्ड मैस्सी एवं नेहरु केंद्र की निदेशक सुश्री मोनिका कपिल मोहता द्वारा किया गया । इन पुस्तकों की

****

बाएँ से दाएँ: श्री रेजीनल्ड मैस्सी, सुश्री मोनिका कपिल और दिव्या माथुर

प्रख्यात कथाकार सूर्यबाला को वाग्मणि सम्मान

लेखिकाओं के बीच दुशाला ओढ़े कथाकार सूर्यबाला

हिंदी की बहुचर्चित कथाकार सूर्यबाला को राजस्थान लेखिका साहित्य संस्थान व राजस्थान विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में ' वाग्मणि सम्मान ' प्रदान किया गया । संस्थान की अध्यक्षा प्रो. पवन सुराणा, संस्थापिका श्रीमती नलिनी उपाध्याय, राजस्थान विश्वविद्यालय की पूर्व हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ. सुदेश बहल ने सूर्यबाला के लेखन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उनके व्यंग्य-कर्म की विशेष चर्चा की । पिछले तीन दशकों से हिंदी कहानी, उपन्यास और हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में सूर्यबाला एक जाना-पहचाना नाम है । इनकी अनेक रचनाएँ विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में भी अनूदित व प्रकाशित हैं। ' अजगर करे न चाकरी ' और ' धृतराष्ट्र टाइम्स ' सूर्यबाला के बहुचर्चित व्यंग्य संग्रह हैं ।

उनके 'मेरे संधि पत्र', 'सुबह के इंतजार तक', 'यामिनी-कथा', 'दीक्षांत', 'अग्निपंखी', उपन्यास और 'एक इंद्रधनुष', 'दिशाहीन', 'थाली भर चाँद', 'मुँडेर पर', 'गृह प्रवेश', ' कात्यायनी संवाद', 'साँझवाती', 'पाँच लंबी कहानियाँ ' कहानी संग्रह हैं । अपने साहित्यिक योगदान के लिए 'प्रियदर्शिनी पुरस्कार', 'घनश्याम दास सराफ पुरस्कार' तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मुंबई विद्यापीठ, आरोही, अखिल भारतीय कायस्थ महासभा, सतपुड़ा संस्कृति परिषद् आदि संस्थाओं से सम्मानित हैं।

सूर्यबाला को विश्व के समस्त हिंदी पाठकों की ओर से बधाई ।..

****

समीक्षा प्रस्तुत की लेखक-आलोचक श्री तेजेंद्र शर्मा ने और कविताओं का सस्वर पाठ किया रंगकर्मी श्री राजेश सिंह ने ।

दिव्या माथुर के अब तक दर्ज़नों काव्य और कहानी-संग्रह हिंदी में प्रकाशित व चर्चित हो चुके हैं । वे यू.के. हिंदी समिति की उपाध्यक्षा एवं नेहरु केंद्र, लंदन में वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी हैं ।

भारतीय उच्चायोग, लंदन में कार्यरत हिंदी व संस्कृति अधिकारी श्री आनंद कुमार ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया ।..

अनुवाद विज्ञान की भूमिका

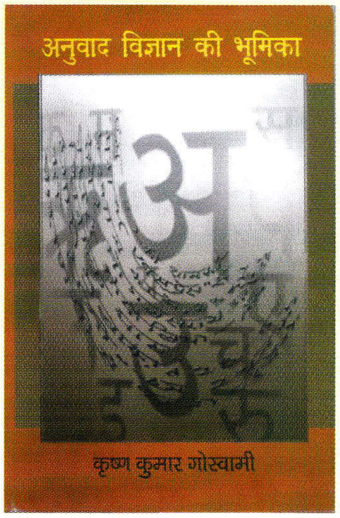

हिंदी में अनुवाद पर ग्रंथस्तरीय विचारपरक लेखन को अब चार दशक से अधिक हो चले हैं और क्रम जारी है । अधिकांश लेखन पारंपरिक हैं । इसमें अनुवाद को प्राय: केवल कलात्मक (स्वत: स्फूर्त) व्यापार के रूप में देखते हुए उस पर सामान्यपरक लगभग उतनी ही स्वत: स्फूर्त आलोचनात्मक टिप्पणियाँ की गई हैं । तथापि, प्रमुखता से अस्सी के दशक के मध्य से ऐसी पुस्तकें भी आने लगीं जिनमें आधुनिक भाषाविज्ञान / अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान का घोषित रूप से सुचिंतित और तर्कसंगत उपयोग होने लगा । इसके फलस्वरूप अनुवाद - विचार में अपेक्षित सैद्धांतिक प्रतिबद्धता और प्रकथनों में संतुलन के गुणों का समावेश हुआ है । ऐसे ग्रंथों के शीर्षक में प्राय: ' विज्ञान ' या ' सिद्धांत ' शब्द का प्रयोग हुआ है । कुछ प्रमुख ग्रंथ हैं, भोलानाथ तिवारी - अनुवाद विज्ञान (1972), रवींद्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी (सं.) - अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ (1985), सुरेश कुमार - अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा (1986), नगेंद्र (सं.) - अनुवाद विज्ञान (1993)। इस श्रृंखला में नवीनतम पुस्तक है, प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी की अनुवाद विज्ञान की भूमिका (वस्तुत: ' विस्तृत भूमिका ') ।

पुस्तक में अनुवाद विज्ञान संबंधी चर्चा के तीन आयाम दिए गए हैं - सिद्धांत, अनुप्रयोग, विविध अवधारणाएँ । सिद्धांत खंड में अनुवाद का अर्थ - स्वरूप - क्षेत्र, प्रकृति, प्रक्रिया, प्रकार आदि केंद्रीय मुद्दों के साथ उनके कुछ विशिष्ट पक्षों - आशु अनुवाद, मशीनी अनुवाद, पाठ की अवधारणा, व्यतिरेकी विश्लेषण, अनुवाद के विभिन्न सिद्धांत आदि पर विचार किया गया है । यह खंड सबसे बड़ा है (लगभग ढाई सौ पृष्ठ) ।

अनुप्रयोग खंड में भाषा की विविध प्रयुक्तियों - साहित्यिक (कविता, नाटक, कथा), वैज्ञानिक, वाणिज्यिक, कार्यालयी, जनसंचारी आदि की अनुवाद संबंधी समस्याओं का सोदाहरण विवरण तथा उनके जो व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए गए हैं, वे तर्कपूर्ण हैं ।

विविध अवधारणाओं के खंड में अनुवाद संबंधी कुछ मूलभूत मुद्दे - अनुवाद और अनुसृजन / तुलनात्मक साहित्य / भाषा शिक्षण / शब्दकोश /पारिभाषिक शब्दावली आदि - के साथ भारत और पश्चिम में अनुवाद कार्य की परंपरा का प्रवृत्तिपरक वर्णन है । अंत में विषय से संबंधित हिंदी और अंग्रेजी के संदर्भ ग्रंथों की सूची है ।

प्रो. गोस्वामी, अन्य ज्ञान-क्षेत्रों के अतिरिक्त, अनुवाद-विचार के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय रहे हैं । उन्होंने इस पुस्तक में विषय - संबंधी पूर्व - प्रकाशित सामग्री का सविवेक उपयोग करते हुए विषय - प्रतिपादन के परिमाण तथा गुणवत्ता दोनों आयामों पर अपनी छाप छोड़ी है । इस प्रकार हिंदी में अनुवाद - विचार संबंधी साहित्य में यह पुस्तक उनका विशिष्ट अवदान है ।

पुस्तक में विषय का सविस्तार विवेचन है, यद्यपि लेखक ने इसे 'भूमिका ' की संज्ञा दी है । इससे लेखक की विनम्रता के साथ यह संभावना भी प्रकट होती है कि वे भविष्य में भी अनुवाद विचार पर अपना लेखन जारी रखेंगे ।

प्रभावित करने वाली अन्य विशेषता है --- व्यावहारिक विश्लेषण तथा विचारणीय बिंदु को समझाने के लिए उदाहरणों की प्रचुरता तथा इस प्रकार विषय-प्रतिपादन का प्रमाणीकरण । ई.आर.कुर्नियस का कथन - ' एक अकेले पाठ के विषय में जो हमें निश्चित कोटि की थोड़ी - सी भी जानकारी मिलती है वह अध्ययन - प्रणालियों की समस्त सैद्धांतिक चर्चाओं से अधिक महत्वपूर्ण है; ' इस पुस्तक पर सही ढंग से लागू होता है ।

लेखक का प्रयास रहा है कि वह यथासंभव नई सामग्री तथा नए विचार दे । सिद्धांत खंड में पिष्टपेषण प्राय: संभावित होता है । परंतु यह पुस्तक इस दोष से ग्रस्त नहीं । आशु अनुवाद (128-154), मशीन अनुवाद (155-168), समतुल्यता का सिद्धांत (169-180), अनुवाद के सिद्धांत (251-258), ये प्रकरण विशेष रूप से प्रासंगिक तथा ज्ञानवर्धक हैं । इन बिंदुओं का विवेचन पर्याप्त रूप से अद्यतन है ।

अनुवाद - विमर्श की आँग्ल - अमरीकी धारा का संदर्भ ग्रहण करते हुए भी लेखक ने इसे भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप बनाने का प्रयास किया । यह देखते हुए कि अंग्रेज़ी को हम अब एक ' स्वदेशी कृत ' भाषा के रूप में ग्रहण करते हैं, उदाहरणों के स्रोत के रूप में अंग्रेज़ी का चयन केवल अतार्किक ही नहीं, अपितु उत्तम भी है। ••

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या : 495, मूल्य : 600 रुपए

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी

जन्म	:	जुलाई, 1942
शिक्षा	:	एम.ए. (हिंदी), एम.लिट् (भाषाविज्ञान), पी - एच. डी. (शैलीविज्ञान) ।
विशेषज्ञता	:	भाषाविज्ञान, शैलीविज्ञान, अनुवाद, प्रयोजनमूलक हिंदी, समाजभाषाविज्ञान, कोशविज्ञान और भाषा प्रौद्योगिकी ।
शैक्षिक सेवा	:	प्रोफ़ेसर और क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान । प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष उच्च शिक्षा और शोध संस्थान (द.भ.हि.प्र. सभा) हैदराबाद । कई राष्ट्रीय समितियों और विश्वविद्यालयों के सदस्य ।
संप्रति	:	प्रोफ़ेसर एवं सलाहकार, प्रगत अभिकलन विकास केंद्र (सी-डैक) नोएडा (संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार) ।

हिंदी का विश्व परिदृश्य

18 मई को नई दिल्ली के साहित्य अकादमी-सभागार में 'हिंदी के वैश्विक परिदृश्य' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय संस्था 'अक्षरम्' और मासिक साहित्यिक पत्रिका 'साहित्य अमृत' के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ। यह गोष्ठी विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. श्रीमती विनोद बाला अरुण के सम्मान में आयोजित की गयी थी जो सचिवालय की कार्यकारी बोर्ड की बैठक में भाग लेने दिल्ली गयी थीं।

बाएँ से दाएँ: विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के माननीय सदस्य डॉ. रत्नाकर पांडे, डॉ. अरुण, श्री राहुल देव, डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय और श्री अनिल जोशी

इस संगोष्ठी में विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के पदाधिकारी, हिंदी के जाने-माने लेखक और हिंदी सेवी उपस्थित थे। इनमें सर्वश्री रत्नाकर पांडे, डी. के. पांडे (संयुक्त सचिव,राजभाषा), परमानंद पांचाल, विश्व मोहन तिवारी, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, राहुल देव, नारायण कुमार, ब्रजेंद्र त्रिपाठी, प्रभाकर श्रोत्रिय, श्रीमती मधु गोस्वामी और श्री सादिक के नाम प्रमुख हैं। सभी वक्ताओं ने एक स्वर से स्वीकार किया कि हिंदी को विश्वभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए उसे भारत में भी प्रभावी भूमिका निभाने के लिए तैयार होना चाहिए। इस हेतु योजनाबद्ध रूप से लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना होगा। 'अक्षरम्' के श्री अनिल जोशी ने कार्यक्रम का बड़ी कुशलता पूर्वक संचालन किया।

डॉ. अरुण ने विश्व हिंदी सचिवालय के उद्देश्य और कार्यों से सबको अवगत कराया और हिंदी के वैश्विक उन्नयन के लिए भारत और विदेशों के विद्वानों एवं संस्थाओं से संगठित प्रयास करने का आह्वान किया।

लेखन का प्रमुख आधार

मैंने तॉलस्ताय, गोर्की, हार्डी, डिकेंस, ओ' हेनरी और ओ' नील को काफी गहराई से पढ़ा है; पर सबसे अधिक अपनापन मुझे तॉलस्ताय में मिला। बर्नार्ड शॉ की उक्तियों का मैं संग्रह करता रहा हूँ। गांधी की अहिंसा का जो प्रभाव मेरे मन पर पड़ा, वह मेरे लेखन का प्रमुख आधार है। तॉलस्ताय की 'वार एंड पीस' ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

विष्णु प्रभाकर

......पृष्ठ 4 का शेष अंश

आज हिंदी विश्व-संदर्भ में अपनी भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए नए पग बढ़ा रही है। ऐसे समय में मनीषी परम्परा के संवाहक साहित्यकार का जीवन-अवसान अत्यन्त कष्टदायी है। उनकी आत्मा की शांति के लिए हमें हिंदी के उन्नयन-कार्य में और अधिक शक्ति एवं निष्ठा के साथ जुटना होगा। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री ओमप्रकाश आदित्य का आकस्मिक निधन भी हिंदी साहित्य की एक बहुत बड़ी क्षति है। उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से हिंदी को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कवि सम्मेलनों में वे सदैव सराहे जाते थे। उनकी रचनाओं में व्यवस्था की निर्ममता पर करारी चोट होती थी। वे केवल हँसाते ही नहीं, संवेदना जगाकर रुलाते भी थे। कविताओं में उनके कटाक्ष श्रोताओं को भीतर तक हिला देते थे। 1987 में श्री आदित्य और डॉ. अशोक चक्रधर जब पहली बार मॉरीशस आए तब उनकी कविताओं को अनेक गोष्ठियों में सुनने का अवसर मिला था। श्री आदित्य की व्यंग्याभिव्यक्ति और सस्वर कविता - पाठ की शैली आज भी मानसपटल पर अपनी संपूर्ण जीवन्तता के साथ अंकित है।

श्री लाड़सिंह गुर्जर और श्री नीरज पुरी हिंदी-गगन पर तेजोमय नक्षत्र के रूप में उभर रहे थे। उनके अवसान से हिंदी का आलोक धूमिल हुआ है। श्री अल्हड़ बीकानेरी हास्य रस के जाने माने कवि थे। कवि-सम्मेलनों में वे अपनी चुभती हास्य-व्यंग्य रचनाओं से जन-मन को उद्वेलित करते थे।

इन सभी दिवंगत साहित्यकारों को हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि।

(डॉ. विनोद बाला अरुण)

01 जून, 2009

आदरणीय डॉ. राजेंद्र जी,

सादर अभिवादन।

विश्व हिंदी समाचार नियमित प्राप्त हो रहा है।

समाचार पत्र का पेपर, मुद्रण तो अच्छा है ही उसमें प्रकाशित सामग्री का चयन भी अनूठा है। विदेश में रहकर अन्य लोग हिंदी के लिए जो कार्य कर रहे हैं वो श्लाघनीय है।

हिंदी से संबंधित जानकारियों व समाचार तथा हिंदी के लिए समर्पित संस्थाओं की जानकारी प्रकाशित करना पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है।

विश्व हिंदी सचिवालय का प्रयास हिंदी के लिए मील का पत्थर साबित होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

पत्र में कुछ रचनात्मक सामग्री यथा कविता, लघुकथा, पुस्तक समीक्षा आदि का प्रकाशन करके उसे और बेहतर बनाया जा सकता है, ऐसा मेरा मानना है।

मेरे योग्य कोई सेवा हो तो लिखें।

हिंदी के लिए कार्यरत कुछ संस्थाओं के पते प्रेषित कर रहा हूँ। xxxx

शेष अगले पत्र में।

(अनिरुद्ध सिंह सेंगर)
संपादक : साहित्य क्रांति, भार्गव कॉलोनी, गुना (म.प्र.) भारत : पिन ? 473001

वरिष्ठ कथाकार राजेंद्र यादव को जयजयवंती सम्मान

हिंदी की अग्रणी साहित्य संस्था 'जयजयवंती ' ने लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री राजेंद्र यादव को उनके साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित करने हेतु एक संगोष्ठी का आयोजन 20 मई 2009 को 'इंडिया हैबिटैट सेंटर ' में किया । मुख्य अतिथि विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. विनोद बाला अरुण थीं। कार्यक्रम के व्यवस्थापक श्री राकेश पांडे ने सभी उपस्थित विद्वानों का स्वागत किया । श्री राकेश पांडे हिंदी जगत की जानी-मानी पत्रिका प्रवासी संसार के संपादक हैं।

श्री राजेंद्र यादव के साथ विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव व अन्य साहित्यकार

संस्था के अध्यक्ष और कार्यक्रम के संयोजक विश्वविख्यात कवि डॉ. अशोक चक्रधर ने जयजयवंती संस्था का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि यह संस्था हिंदी के उन्नयन के लिए कंप्यूटर के अधिकाधिक प्रयोग को परम आवश्यक मानती है और इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है । प्रतिमाह यह संस्था एक संगोष्ठी आयोजित करती है जिसमें किसी विशिष्ट साहित्यकार को सम्मानित करने के साथ ही कंप्यूटर के विभिन्न पक्षों पर प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं ताकि लोगों को कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग की अधिकाधिक जानकारी प्राप्त हो सके तथा उससे जुड़ी समस्याओं पर विचार किया जा सके । उन्होंने महासचिव महोदया के प्रति आभार प्रकट किया कि वे कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुईं और श्री राजेंद्र यादव को धन्यवाद किया कि उन्होंने कार्यक्रम और जयजयवंती को गौरव दिया ।

इस अवसर पर तीन लघु प्रस्तुतियाँ दी गईं । सुश्री मीनाक्षी पायल ने अपनी प्रस्तुति में बताया कि आई. एम. ई का प्रयोग करके कैसे हिंदी में सरलता पूर्वक कंप्यूटर पर काम किया जा सकता है और डॉ. अशोक चक्रधर ने कंप्यूटर पर हिंदी संबंधी अन्य जानकारियाँ देते हुए यह भी बताया कि कैसे हिंदी में ई-मेल किया जा सकता है । इस गोष्ठी का शीर्षक ही था - मेल करें ई-मेल करें । डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा जो 'कंप्यूटर में हिंदी' पर नए प्रयोग करने में संलग्न हैं, ने 'एन्कोडिंग' पर प्रस्तुति दी । सभी प्रस्तुतियाँ अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्द्धक थीं। युवा हास्य कवि श्री अरुण जेमिनी ने अपनी कविता का ब्लॉग पाठ करके सबके मन को खूब गुदगुदाया ।

इस अवसर पर बोलते हुए महासचिव महोदया ने कहा कि यह सराहनीय बात है कि डॉ. चक्रधर साहित्य - सृजन और सस्वर काव्यपाठ के साथ ही कंप्यूटर में हिंदी के प्रयोग को अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने के लिए अपने साथियों के साथ जुड़े हुए हैं । यह बहुत ही उपयुक्त एवं आवश्यक कार्य है । विश्व हिंदी सचिवालय इस कार्य के महत्व को अच्छी तरह समझता है ।

उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी कंप्यूटर विद्वानों से आग्रह किया कि वे भारत की क्षेत्रीय भाषाओं एवं राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषाओं की ध्वनियों को नागरी लिपि में समाहित करने की दिशा में यदि विचार कर सकें तो इससे नागरी लिपि अधिकाधिक लोकप्रिय और सर्वस्वीकृत बन सकेगी । उन्होंने श्री राजेन्द्र यादव के साहित्यिक योगदान की चर्चा की और उन्हें सम्मान प्राप्ति के लिए बधाई दी। उपस्थित हिंदी सेवियों ने महासचिव की सदाशयता का हार्दिक अभिनंदन किया और हिंदी के वैश्विक उन्नयन के लिए हर संभव सहयोग देने के लिए उन्हें आश्वासन दिया ।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में जयजयवंती के योगदान की सराहना करते हुए कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग के महत्व पर बल दिया ।

इस अवसर पर अनेक सुविख्यात साहित्यकार और कंप्यूटर मर्मज्ञ उपस्थित थे। महासचिव महोदया को सबसे विचार-विमर्श करने का अवसर प्राप्त हुआ। ••

देवनागरी लेखन में एकरूपता की आवश्यकता

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. विनोद बाला 'अरुण' नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली कार्यालय में दिनांक 22 मई 2009 को पधारीं । (अपनी अत्यन्त व्यस्तता के कारण वे गुड़गॉव स्थित, विश्व नागरी एकक में नहीं जा सकती थीं) कार्यालय में परिषद् की ओर से परिषद् के महामंत्री, डॉ. परमानंद पांचाल ने उनका स्वागत किया । इस अवसर पर डॉ. आनंद स्वरूप पाठक, श्री मदन शर्मा, श्री राम कुमार पाराशर के अतिरिक्त सूचना प्रौद्योगिकी और आई. आई.टी. आई. आई.ए. ग्वालियर के पूर्व निदेशक प्रोफेसर ओम विकास तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के पूर्व प्रोफेसर एवं सी-डेक, नोएडा के परामर्शदाता डॉ. के. के. गोस्वामी और योगेश अग्रवाल भी उपस्थित थे ।

डॉ. विनोद बाला 'अरुण ' ने कहा कि नागरी लिपि परिषद् देश विदेश में देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में प्रशंसनीय कार्य कर रही है । यह ऐसा कार्य है जिसे बढ़ाने की भारत में और विश्व में भी अत्यंत आवश्यकता है । आज आवश्यकता है कि अन्य भाषाओं की ध्वनियों को नागरी लिपि में समाहित किया जाए, ताकि इस लिपि में भारत की अन्य भाषाओं को भी लिखा जा सके। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में देवनागरी लेखन में एकरूपता की आवश्यकता है और इसके लिए यूनिकोड को सर्वत्र मान्यता मिलनी चाहिए ।

डॉ. ओम विकास ने नागरी लिपि को वैज्ञानिक मानते हुए उसके अधिक प्रचार पर बल दिया । उन्होंने डॉ. के. के. गोस्वामी द्वारा यूनिकोड के संबंध में उठाए गई कुछ शंकाओं का भी समाधान किया। डॉ. आनंद स्वरूप पाठक ने देवनागरी लिपि को पूर्ण वैज्ञानिक बताते हुए पाणिनि के ऐतिहासिक ग्रंथ अष्टाध्यायी का संदर्भ दिया ।

डॉ. परमानंद पांचल ने विश्व नागरी की संभावनाओं का आकलन करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि सचिवालय ने न्यूयार्क (अमेरिका) में आयोजित 8वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित नागरी लिपि से संबंधित मंतव्य को कार्यान्वित करने की दिशा में सर्वप्रथम कदम उठाया और पिछले वर्ष 25-मार्च को देवनागरी लिपि के संबंध में एक भव्य संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें मुख्य भाषण देने के लिए मुझे आमंत्रित किया गया । (नागरी संगम अंक : 122 से साभार) ••

देवनागरी लिपि और सूचना प्रौद्योगिकी

कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी

के.आई.आई.टी कॉलेज आफ़ इंजीनियरिंग, गुड़गाँव, हरियाणा के तत्वावधान में 13 दिसंबर 2008 (शनिवार) को देवनागरी लिपि और सूचना प्रौद्योगिकी विषयक उच्च स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। के. आई. आई. टी वर्ल्ड एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष श्री बलदेव राज कामराह की अध्यक्षता में उद्घाटन सत्र हुआ । के. आई. आई. टी कॉलेज के कार्यपालक निदेशक और सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. श्याम सुंदर अग्रवाल ने अपने स्वागत भाषण में देवनागरी लिपि के मानकीकरण, वैज्ञानिक स्वरूप और प्रौद्योगिकीय संदर्भ की चर्चा की ।

संगोष्ठी की कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष और मुख्य समन्वयक तथा सुविख्यात भाषाविज्ञानी प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने अपने आधारपत्र में भारत की प्रमुख लिपियों में देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और महत्व की चर्चा करते हुए पिछले सौ वर्षों से नागरी लिपि में हुए सुधारों की विवेचना की । प्रो. गोस्वामी ने यह भी बताया कि हिंदी में देवनागरी लिपि के स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर आदि कुल 99 वर्ण आते हैं, किंतु हिंदी कुंजीपटल की सीमा विरामचिह्नों सहित 96 से अधिक अक्षर देने की नहीं है । दूसरा कारण देवनागरी लिपि का अभी तक मानकीकरण न हो पाना है । संयुक्ताक्षरों की अलग समस्या है । हिंदी में अनेक स्थलों पर स्वनिमों (ध्वनियों) ओर लेखिमों (वर्णों) की भिन्नता मिलती है । इस संदर्भ में अभी तक कोई सुचिंतित अध्ययन नहीं हुआ है । सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि के मानकीकरण और संवर्धन के लिए स्वनिमों और लेखिमों में मैपिंग अर्थात मिलान करने की आवश्यकता है, ताकि एक निश्चित पैटर्न विकसित किया जा सके । प्रो.गोस्वामी ने हिंदी कंप्यूटर और टाइपराइटर के हिंदी कुंजीपटल की मानकता पर प्रश्न उठाते हुए यह भी कहा कि पचास वर्षों में टाइपराइटर के हिंदी कुंजीपटल में तीन-चार परिवर्तन करने के बाद भी उसका मानकीकरण नहीं हो पाया, जबकि गत सौ वर्षों से समूचे विश्व में अंग्रेज़ी कुंजीपटल में एकरूपता मिलती है । यूनिकोड की समस्या को उठाते हुए प्रो. गोस्वामी ने यह भी बताया कि यूनिकोड के हिंदी संस्करण में कई अशुद्धियाँ मिलती हैं, जिनसे हिंदी के मानकीकरण में बाधा पड़ती है । अत: सूचना प्रौद्योगिकी के युग में देवनागरी लिपि और वर्तनी के मानकीकरण और एकरूपता, लेखन विधि एवं उच्चारण, भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं की ध्वनियों के लिए परिवर्द्धित देवनागरी लिपि का विकास कर उसे विश्वस्तरीय लिपि के रूप में प्रसारित करने की आवश्यकता है । श्री बलदेव राज कामराह ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कहा कि यदि आज सूचना प्रौद्योगिकी के युग में देवनागरी लिपि को यांत्रिक सुविधाओं से जोड़ा जाए तो इसके विश्व नागरी लिपि के रूप में स्थापित होने में कोई अड़चन नहीं आएगी । अंत: में के. आई. आई. टी. वर्ल्ड एजुकेशन सोसायटी के मुख्य कार्यपालक डॉ. हर्षवर्धन ने देवनागरी लिपि की उपयोगिता पर चर्चा करते हुए सभी विद्वानों का धन्यवाद किया ।

श्री बलदेव राज कामराह की अध्यक्षता में संपन्न समापन सत्र में खादी आयोग भारत सरकार के पूर्व अध्यक्ष श्री लक्ष्मी प्रसाद ने संगोष्ठी की महत्ता और उपयोगिता की चर्चा करते हुए यह कामना प्रकट की कि यदि हम इस महत्वपूर्ण कार्य में भविष्य में संलग्न रहे तो देवनागरी लिपि के विश्व नागरी बनाने में कोई अड़चन नहीं आएगी । प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने सभी सत्रों का संचालन करते हुए समापन सत्र में उसकी रिपोर्ट देते हुए कहा कि इस विषय पर एक वृहद परियोजना तैयार करने का प्रस्ताव है और भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग की अपेक्षा की जाती है। इस प्रस्ताव का अनुमोदन डॉ. श्याम सुंदर अग्रवाल ने किया ।

श्री बलदेव राज कामराह ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में आशीर्वाद देते हुए कहा कि यह संगोष्ठी एक प्रकार से इस परियोजना का श्रीगणेश है । इसके लिए हमें अथक प्रयास करने हैं ताकि मशीनीकरण और कंप्यूटरीकरण के इस युग में देवनागरी लिपि अपना परचम समूचे विश्व में फैला सके । अंत में के. आई. आई. टी शिक्षा संस्थान के प्राचार्य डॉ. एम. सेनगुप्त ने आभार प्रकट करते हुए कहा कि आज की संगोष्ठी में भाषाविदों और प्रौद्योगिकीविदों ने मिलजुल कर देवनागरी लिपि और सूचना प्रौद्योगिकी में समन्वय लाने का जो प्रयास किया है, वह आगे चल कर अवश्य ही फलीभूत होगा । डॉ. सेनगुप्त ने कंप्यूटर सोसायटी ऑफ़ इंडिया दिल्ली चेप्टर, नागरी लिपि परिषद, विद्यापति संस्थान और दिल्ली गांधी स्मारक निधि राजघाट के सहयोग की अनुशंसा करते हुए उनका धन्यवाद भी किया ।

संगोष्ठी में उपस्थित महानुभाव

इस संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में डॉ. परमानंद पांचाल, डॉ. ओम विकास, डॉ. गंगा प्रसाद विमल, डॉ. पुष्पलता तनेजा, श्री वी. एन. शुक्ल, श्री विजय कुमार, डॉ. नरेंद्र व्यास, श्री मनोज जैन आदि विद्वानों ने अपने-अपने विचारों से प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन किया ।

•••